



भारत का राजपत्र The Gazette of India

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं०. 36] नई दिल्ली, शनिवार, सितम्बर 5, 1998 (भाद्रपद 14, 1920)
No. 36] NEW DELHI, SATURDAY, SEPTEMBER 5, 1998 (BHADRA 14, 1920)

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में रखा जा सके।
(Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation)

भाग IV [PART IV]

गैर-सरकारी व्यक्तियों और गैर-सरकारी संस्थाओं के विज्ञापन और सूचनाएं

[Advertisements and Notices issued by Private Individuals and Private Bodies.]

LOST

The Certificate of Authority RD/4455 dated issued in favour of Shri Jagan Lal Gupta, resident of 24, Gautam Nagar, New Delhi-49 has been lost by him. The use of authority letter by any person will be illegal.

JAGAN LAL GUPTA
Authorised Agent RD 4455
24, Gautam Nagar,
New Delhi-110 049.

नाम परिवर्तन

मैं, अब तक अमर सिंह के नाम से ज्ञात सुपुत्र श्री सरमन सिंह, कार्यालय आई. टी. आई. लिमिटेड नैनी, इलाहाबाद (सी. टी. ए.) पद पर कार्यरत, निवासी वर्तमान पता ईए-174 ए. डी. ए. कालोनी, नैनी, इलाहाबाद ने अपना नाम बदल लिया है और इसके पश्चात् मेरा नाम अमर सिंह सागर होगा।

प्रमाणित किया जाता है कि मैंने इस बारे में अन्य कानूनी शर्तों को पूरा कर लिया है।

अमर सिंह
ह. / (वर्तमान पुराने नाम के अनुसार)

मैं, अब तक कु. अनिल भारती सिंह के नाम से ज्ञात सुपुत्री श्री मुन्नीलाल सुमन, निवासी वर्तमान पता ग्राम पहाड़ीपुर, पो. भोंडोला, थाना सकरौली, तहसील जलेश्वर, जिला एटा हाल अजीतनगर, बैंकर्स कालोनी, इटावा (उत्तर प्रदेश) ने अपना नाम बदल लिया है और इसके पश्चात् मेरा नाम कु. अनुला होगा।

प्रमाणित किया जाता है कि मैंने इस बारे में अन्य कानूनी शर्तों को पूरा कर लिया है।

कु. अनिल भारती सिंह
ह. / (वर्तमान पुराने नाम के अनुसार)

मैं, अब तक मुन्नीलाल सुमन के नाम से ज्ञात सुपुत्र श्री राम-दास, कार्यालय सेंट्रल बैंक आफ इण्डिया शाखा जसवन्तनगर (इटावा) में उपप्रबंधक पद पर कार्यरत, निवासी वर्तमान पता ग्राम पहाड़ीपुर, पो. भोंडोला, थाना सकरौली, तहसील जलेश्वर, जिला एटा हाल अजीतनगर, बैंकर्स कालोनी, इटावा (उत्तर प्रदेश) ने अपना नाम बदल लिया है और इसके पश्चात् मेरा नाम विनय प्रकाश होगा।

प्रमाणित किया जाता है कि मैंने इस बारे में अन्य कानूनी शर्तों को पूरा कर लिया है।

मुन्नीलाल समन
ह./ (वर्तमान पुराने नाम के अनुसार)

मैं, अब तक बृजराज किशोर के नाम से ज्ञात सुपुत्र श्री गोविन्द-स्वरूप, निवासी वर्तमान पता ग्राम-ललखुरिया, पोस्ट-बमटापुर, थाना एवं तहसील-करहल, जिला-मैनपुरी (उत्तर प्रदेश) ने अपना नाम बदल लिया है और इसके पश्चात् मेरा नाम कीधराज होगा।

प्रमाणित किया जाता है कि मैंने इस बारे में अन्य कानूनी शर्तों को पूरा कर लिया है।

बृजराज किशोर
ह./ (वर्तमान पुराने नाम के अनुसार)

मैं, अब तक सुदह सिंह जीजान के नाम से ज्ञात सुपुत्र श्री के.के. जीजान, कार्यालय बेसिक शिक्षण परिषद मजदूरी प्राथमिक विद्यालय, मजदूरी में सहायक अध्यापक पद पर कार्यरत, निवासी नर्मदा पहा-सरमेना, सुदह, जनपद-मुक्त ने अपना नाम बदल लिया है और इसके पश्चात् मेरा नाम सुवर्ण सिंह जीजान होगा।

प्रमाणित किया जाता है कि मैंने इस बारे में अन्य कानूनी शर्तों को पूरा कर लिया है।

सुदह सिंह जीजान
ह./ (वर्तमान पुराने नाम के अनुसार)

धर्म परिवर्तन

मैं, क. अनिल भारती सिंह एत्री श्री मुन्नीलाल समन, निवासी वर्तमान पता ग्राम-पटाड़ीपुर, पो. भीड़ोला थाना सकरौली, तहसील जलेश्वर, जिला एटा हाल-अजीतनगर, बैंकर्स कालोनी, इटावा (उत्तर प्रदेश) एतद्वारा सत्य निष्ठापूर्वक पृष्ट एवं घोषणा करती हूँ कि मैंने दिनांक 22-5-1997 से बौद्ध धर्म धारण कर लिया है और हिन्दू धर्म त्याग दिया है।

प्रमाणित किया जाता है कि मैंने इस बारे में अन्य कानूनी शर्तों को पूरा कर लिया है।

क. अनिल भारती सिंह
ह./ (वर्तमान पुराने नाम के अनुसार)

मैं, मुन्नीलाल समन सुपुत्र श्री रामदास, कार्यालय सेन्ट्रल बैंक आफ इण्डिया शाखा जसवन्तनगर (इटावा) में उपप्रबंधक पद पर कार्यरत, निवासी वर्तमान पता ग्राम-पटाड़ीपुर, पो. भीड़ोला, थाना सकरौली, तहसील जलेश्वर, जिला एटा, हाल-अजीतनगर, बैंकर्स कालोनी, इटावा (उत्तर प्रदेश) एतद्वारा सत्य निष्ठापूर्वक पृष्ट एवं घोषणा करता हूँ कि मैंने दिनांक 5-3-1995 से बौद्ध धर्म धारण कर लिया है और हिन्दू धर्म त्याग दिया।

प्रमाणित किया जाता है कि मैंने इस बारे में अन्य कानूनी शर्तों को पूरा कर लिया है।

मुन्नीलाल समन
ह./ (वर्तमान पुराने नाम के अनुसार)

मैं, बृजराज किशोर सुपुत्र श्री गोविन्दस्वरूप, निवासी वर्तमान पता ग्राम-ललखुरिया, पोस्ट-बमटापुर, थाना एवं तहसील-करहल, जिला-मैनपुरी (उत्तर प्रदेश) एतद्वारा सत्य निष्ठापूर्वक पृष्ट एवं घोषणा करता हूँ कि मैंने दिनांक 20-5-97 से बौद्ध धर्म धारण कर लिया है और हिन्दू धर्म त्याग दिया है।

प्रमाणित किया जाता है कि मैंने इस बारे में अन्य कानूनी शर्तों को पूरा कर लिया है।

बृजराज किशोर
ह./ (वर्तमान पुराने नाम के अनुसार)

NOTICE

NO LEGAL RESPONSIBILITY IS ACCEPTED FOR THE PUBLICATION OF ADVERTISEMENTS/PUBLIC NOTICES IN THIS PART OF THE GAZETTE OF INDIA. PERSONS NOTIFYING THE ADVERTISEMENTS/PUBLIC NOTICES WILL REMAIN SOLELY RESPONSIBLE FOR THE LEGAL CONSEQUENCES AND ALSO FOR ANY OTHER MISREPRESENTATION ETC.

BY ORDER,
Controller of Publication

CHANGE OF NAMES

I, hitherto known as AMAR KUMAR ROY MONDAL S/o Sri SUBODH KR. ROY MONDAL, employed as Sr. Stenographer in the Eastern Railway, 17, N.S. Road, Calcutta-700 001, residing at 19, Sodepur 1st Lane, P.O. Haridevpur, Calcutta-700 082, have changed my name and shall hereafter be known as 'AMAR KUMAR ROY'.

It is certified that I have complied with other legal requirements in this connection.

AMAR KUMAR ROY MONDAL
[Signature (in existing old name)]

I, hitherto known as KAMAL KRISHNA KHASNOBISH S/o Late GIRINDRA NATH KHASNOBISH, employed as U.D.C. in the Gun & Shell Factory, Cossipore, Calcutta-700 002, residing at Italgacha-Ambagan, Calcutta-79, have changed my name and shall hereafter be known as KAMAL KRISHNA BANERJEE.

It is certified that I have complied with other legal requirements in this connection.

KAMAL KRISHNA KHASNOBISH
[Signature (in existing old name)]

I, hitherto known as RANJIT INDER SINGH SAROYE S/o Late INDER SINGH, employed as Examiner (Engg.) in the Opto Electronics Factory, Raipur, residing at Qr. No. 161/1, Old Type-II, Ladpur, Dehradun, have changed my name and shall hereafter be known as RANJIT SINGH SAROYE.

It is certified that I have complied with other legal requirements in this connection.

RANJIT INDER SINGH SAROYE
[Signature (in existing old name)]

I, hitherto known as Smt. JAYALAKSHMI W/o SHIVA-KUMAR B.G., as House Wife, residing at Humcha, Hosanagara Taluk, Shimoga District, have changed my name and shall hereafter be known as YASHASWATHI JAIN.

It is certified that I have complied with other legal requirements in this connection.

Smt. JAYALAKSHMI
[Signature (in existing old name)]

I, hitherto known as B. R. GOEL S/o CHAURANJI LAL GOEL, employed as Asstt. Director O.A. in the office of DGS&D, Parliament Street New Delhi-1, residing at 114-A, S.S. Ramesh Nagar, New Delhi-110 015, have changed the name of minor son KALPIT GOEL aged 16 years and he shall hereafter be known as KAPIL GOEL.

It is certified that I have complied with other legal requirements in this connection.

B. R. GOEL
Signature

I, hitherto known as RAM WATI W/o Shri J.R. YADAV, residing at Flat No. 5, C.P.W.D. Enquiry Office Netaji Nagar, New Delhi-110 023, have changed my name and shall hereafter be known as ANITA YADAV.

It is certified that I have complied with other legal requirements in this connection.

RAM WATI
[Signature (in existing old name)]

I, hitherto known as SUBIR DEBNATH S/o Late JIBAN DEBNATH, employed as Gangman in the Engg. Deptt. residing as Netajee Nagar, P.O. & Dist. Bongaigaon, Assam, have changed my name and shall hereafter be known as SUBIR DEB.

It is certified that I have complied with other legal requirements in this connection.

SUBIR DEBNATH
[Signature (in existing old name)]

I, hitherto known as SINGASON S/o JINKU DAS, employed as S/Watchman in the Engg. Deptt., residing at Sorbhog, Post Office at Sorbhog, Distt. Barpeta, Assam, have changed my name and shall hereafter be known as SINGASON JESHWARA.

It is certified that I have complied with other legal requirements in this connection.

SINGASON
L. T. I. of Singason

I, hitherto known as MEENA KHATOON W/o JAMIL AKHTAR KHAN, employed as Security Assistant in the Hotel Hyat Regency, residing at A-33/514, Air India Colony, Vasant Vihar, New Delhi, have changed my name and shall hereafter be known as MEENA KHAN.

It is certified that I have complied with other legal requirements in this connection.

MEENA KHATOON
[Signature (in existing old name)]

I, hitherto known as UDAI NARAYAN RAI S/o SRI JAGDEO ROY, employed as Head Clerk in the Time Keeping Organisation, CLW/Chittaranjan, P. O. Chittaranjan, Distt. Burdwan, residing at Street No. 30, Qrs. No. 23/B, P.O. Chittaranjan, Distt. Burdwan (W.B.), have changed my name and shall hereafter be known as UDAY NARAYAN ROY.

It is certified that I have complied with other legal requirements in this connection.

UDAI NARAYAN RAI
[Signature (in existing old name)]

I, hitherto known as Capt (Mrs.) L. KIPGEN W/o Major W.J.K. SINGH, employed as MNS Officer in the Base Hospital, Delhi Cantt., residing at Delhi Cantt., have changed my name and shall hereafter be known as Capt. (Mrs.) L. LAKSHMI SINGH.

It is certified that I have complied with other legal requirements in this connection.

Capt. (Mrs.) L. KIPGEN
[Signature (in existing old name)]

I, hitherto known as CHANDI S/o SATYA, employed as P W S in the Senior Section Engineer (P. Way) /S.E. Rly./ KGP, residing at Vill. Fakirganja, P.O. Raghunathbari, District Midnapore, have changed my name and shall hereafter be known as Sri CHANDI CHARAN GHARA.

It is certified that I have complied with other legal requirements in this connection.

CHANDI
[Signature (in existing old name)]

I, hitherto known as SANGEETA BANSAL W/o OM PRAKASH KANSAL, residing at II/E-62, Nehru Nagar, Ghaziabad, have changed my name and shall hereafter be known as ALKA KANSAL.

It is certified that I have complied with other legal requirements in this connection.

SANGEETA BANSAL
[Signature (in existing old name)]

I, hitherto known as SHIVE PRAKASH S/o Shri SHEO DEV RAI, employed as Scientist 'B' in National Institute of Hydrology, Roorkee, residing at Western Himalayan Regional Centre, Irrigation and Flood Control Complex, Satwari Cantt., Jammu-180 003, have changed my name and shall hereafter be known as SHIVE PRAKASH RAI.

It is certified that I have complied with other legal requirements in this connection.

SHIVE PRAKASH
[Signature (in existing old name)]

I, hitherto known as SWATI ASIJA daughter of Mr. NARESH KUMAR ASIJA, employed as Medical Officer in the Army Medical Corps of Indian Army, residing at 308, Field Ambulance C/o 56 APO, have changed my name and shall hereafter be known as SWATI ASIJA KUMAR.

It is certified that I have complied with other legal requirements in this connection.

SWATI ASIJA
[Signature (in existing old name)]

I, hitherto known as PAUNIKAR MANOJ WAMAN S/o Shri WAMANRAO PAUNIKAR, employed as CDA/TM in Track Machine Dte. of RDSO/Lucknow, residing at Qr. No. B/186/2, Manak Nagar, RDSO Colony, Lucknow-226 011, have changed my name and shall hereafter be known as PAUNIKAR MANOJ WAMANRAO.

It is certified that I have complied with other legal requirements in this connection.

PAUNIKAR MANOJ WAMAN
[Signature (in existing old name)]

I, hitherto known as DOLLY BHUSHAN daughter of Late Shri SATYA BHUSHAN, a Student in the Convent of Jesus & Marry School, Bangla Sahib Marg, New Delhi, residing at 16-D, College Lane, Bangali Market, New Delhi, have changed my name and shall hereafter be known as ANJALI BHUSHAN.

It is certified that I have complied with other legal requirements in this connection.

DOLLY BHUSHAN
(Signature (in existing old name))

I, hitherto known as HAV SABU VARGHESE S/o Shri K.V. VARGHESE, Kizhakedathu House, P.O. Meemuttty, Distt. Calicut, Kerala, employed as Havildar/Clerk (AOC) in the COD, Dehu Road, residing at Qtr. No. 120/5, Ashok Nagar, COD Dehu Road, Pune 412-101, (MR), have changed the name of minor son S/O S. VARGHESE aged 6 1/2 years and he shall hereafter be known as JACKSON S. VARGHESE.

It is certified that I have complied with other legal requirements in this connection.

HAV SABU VARGHESE
Signature

नेशनल स्टाक एक्सचेंज आफ इण्डिया लिमिटेड, नई दिल्ली

नेशनल स्टाक एक्सचेंज की उप लिधियों के अध्याय XI के स्थान पर निम्नलिखित अध्याय रखा जाएगा।

अध्याय XI : माध्यस्थता

परिभाषा

'माध्यस्थता' से एकमात्र माध्यस्थ या माध्यस्थों का एक पैनल अभिप्रेत होगा।

'अभिनियम' से माध्यस्थता और सुलह अभिनियम, 1996 अभिप्रेत है और इसमें तत्समय प्रवृत्त कोई कानूनी उपान्तरण, उनका प्रतिस्थापन या पुनः अभिनियमन अभिप्रेत है।

माध्यस्थता के लिए विषय - निदेशः

(1) एक्सचेंज का उपविधियों, नियमों और विनियमों के अधीन किए गए सभी व्यवहारों, संविदाओं और संव्यवहारों से उत्पन्न या उनके संबंध में होने वाले परस्पर व्यापारी सदस्यों के बीच और व्यापारी सदस्यों तथा संघटकों के बीच उत्पन्न सभी दावों मत-वैभिन्य या विवाद या उनसे आनुषंगिक या उनके अनुसरण में किसी बात के प्रति विरोध या उसकी विधि मान्यता, अग्रनिर्णय, निर्वचन, पूर्ति या उनके पक्षकारों की अधिकार बाधताओं और वास्तविक प्रतिनिधित्व के अन्तर्गत ऐसा कोई प्रश्न है कि ऐसे व्यवहार, संव्यवहार और संविदाएं की गई हैं या नहीं, भी है, इन उपविधियों और उपबंधों के अनुसार माध्यस्थता को प्रस्तुत किए जाएंगे।

इस उपविधि और विनियमों के उपबंध सभी व्यवहारों, संविदाओं और संव्यवहारों का भाग रूप समझे जाएंगे।

(2) सभी व्यवहार, संविदाएं और संव्यवहार जो एक्सचेंज की उपविधियों, नियम और विनियमों के अधीन रहते हुए बनाए जाते हैं या बनाए गए समझे जाते हैं और इस उपविधि और विनियमों में दिए गए माध्यस्थता से संबंधित उपबंध व्यवहारों, संविदाओं और संव्यवहारों के भाग रूप होंगे और पक्षकारों द्वारा माध्यस्थता करार लिखित में किया गया समझा जाएगा और उपर खण्ड (1) में निर्दिष्ट प्रकृति के सभी दावों, मतवैभिन्य या विवाद इन उपविधियों और विनियमों में यथा उपबंधित माध्यस्थता को प्रस्तुत किए जाएंगे।

दावों, मतवैभिन्य या विवादों के माध्यस्थता को निर्देश के लिए परिसीमा अधि

(3) (1) उपर खण्ड (1) में निर्दिष्ट सभी दावों, मतवैभिन्य या विवाद माध्यस्थता को उस तारीख से जिसको दावा, मतवैभिन्य या विवाद उद्भूत होता है या उद्भूत हुआ समझा गया है छह मास के भीतर माध्यस्थता को प्रस्तुत किया जाएगा। छह मास की अवधि अग्रधारित करने के लिए, इस अभिनियम के उपबंधों के अधीन शुरू की गई और संचालित, सुलह कार्यवाहियों, यदि कोई हों, और सुसंगत प्राधिकारी द्वारा दावों, मतवैभिन्य या विवाद के प्रशासनिक रूप से निपटाने में लगा समय शामिल नहीं किया जाएगा।

सुसंगत प्राधिकारी की विनियम विहित करने की शक्ति

(4) (क) सुसंगत प्राधिकारी, निम्नलिखित की बाबत समय-समय पर विनियम विहित कर सकेगा :

(1) माध्यस्थता कार्यवाहियों में पक्षकारों द्वारा अपनाई जाने वाली प्रक्रिया विशिष्ट रूप से और पूर्वगामी शक्ति पर प्रतिकूल प्रभाव डाले बिना, ऐसी प्रक्रिया अन्य बातों के साथ-साथ निम्नलिखित के लिए उपबंध कर सकेगी :

- (क) प्रयुक्त होने वाले प्रणाल;
- (ख) संघर्ष की जाने वाली फीस;
- (ग) दोनों पक्षकारों द्वारा अभिवचनों की प्रस्तुति की रीति, प्रकार और समय-अवधि;
- (घ) पक्षकारों द्वारा अभिवचनों में संशोधन या अनुरोध के अनुरोधों के संबंधित मामलों;
- (ङ) पक्षकारों द्वारा ऐसे अभिनियम प्रस्तुत करने में असफलता के परिणाम।

(2) माध्यस्थता कार्यवाहियों के संचालन में माध्यस्थ द्वारा अपनाई जाने वाली प्रक्रिया विशिष्ट रूप से और पूर्वगामी शक्ति पर प्रतिकूल प्रभाव डाले बिना ऐसी प्रक्रिया में अन्य बातों के साथ-साथ निम्नलिखित की बाबत उपबंध किया जा सकता है :

- (क) सुनवाई का स्थान; और
- (ख) वे शर्तें और निर्बंधन जिनके अधीन माध्यस्थ विनिर्दिष्ट विवादों पर रिपोर्ट देने के लिए विवेचनाओं की नियुक्ति कर सकेगा और वह प्रक्रिया जो ऐसी नियुक्ति पर माध्यस्थता कार्यवाहियों में अपनाई जाएगी।

(3) ऐसी परिस्थितियों और तथ्यों पर विचार करने के पश्चात् जिन्हें सुसंगत प्राधिकारी उपयुक्त समझे, विभिन्न दावों, मतवैभिन्य या विवादों के लिए माध्यस्थता कार्यवाहियों के अलग-अलग सेट होंगे, ऐसी परिस्थितियों और तथ्यों में विषय वस्तु का मूल्य और ऐसे दावों, मतवैभिन्य या विवादों में पक्षकारों के रूप में अन्तर्गत व्यक्ति भी शामिल हैं।

(4) विभिन्न क्षेत्रों के लिए माध्यस्थता पीठों का सृजन या माध्यस्थता का संचालन करने के लिए भौगोलिक अवस्थितियां विहित करना और न्यायालयों को विहित करना जिनकी इस अभिनियम के प्रयोजनों के लिए अधिकारिता है।

(5) वे दावों, मतवैभिन्य या विवाद जो एकमात्र माध्यस्थता निर्देशित किए जा सकते हैं और वे दावों, मतवैभिन्य या विवाद जो मध्यस्थों के पैनल को निर्देशित किए जा सकते हैं।

(6) मध्यस्थों के रूप में कार्य करने के लिए पात्र व्यक्तियों की नियुक्ति प्रक्रिया।

(7) मध्यस्थों की नियुक्ति की प्रक्रिया ।

(8) वे शर्तें, निर्बंधन और अर्हताएँ जिनके अधीन किसी माध्यस्थ की नियुक्ति की जा सकती है ।

(9) मध्यस्थों के पैनल के मामले में मध्यस्थों की संख्या का अधिधारण इस शर्त के अधीन होगा कि जब किसी दावे, मतवीभन्न्य या विवाद की सुनवाई और अधिधारण मध्यस्थों के पैनल द्वारा किया जाएगा तो ऐसे पैनल में मध्यस्थों की संख्या समसंख्या नहीं होगी । मध्यस्थों के पैनल का गठन करते समय एकसंख्य इस बात का सुनिश्चित करने के लिए सभी प्रयास करेगा कि किसी भी समय मध्यस्थों के पैनल में गैर-आध्यापारी सदस्यों की संख्या साठ प्रतिशत से कम न हो ।

(10) मध्यस्थ के पद में किसी भी कारण के रिक्ति होने की दशा में प्रतिस्थानी मध्यस्थ की नियुक्ति करने के लिए समय अवधि ।

(11) वे मुद्दे जिनका प्रकटन किसी ऐसे व्यक्ति द्वारा किया जाना है जिससे उसकी मध्यस्थ के रूप में सम्भावित नियुक्ति के संबंध में सम्पर्क किया गया है ।

(12) किसी मध्यस्थ पर आक्षेप करने के लिए अंगीकृत की जाने वाली प्रक्रिया ।

(13) (क) ऐसे दावे, मतवीभन्न्य या विवाद जो मध्यस्थ द्वारा तब तक सुनवाई के बिना विनिश्चित किये जा सकते हैं जब तक कि दोनों में से किसी पक्षकार ने लिखित रूप में सुनवाई के लिए अनुरोध न किया हो और वह समयावधि जिसके भीतर ऐसा अनुरोध किया जाएगा ।

(ख) ऐसे दावे, मतवीभन्न्य या विवाद जो मध्यस्थ द्वारा तब तक केवल पक्षकारों की सुनवाई द्वारा विनिश्चित किए जा सकते हैं, जब तक कि दोनों पक्षकार संयुक्त रूप से किसी सुनवाई के अधिकार का अधित्यजन नहीं करते हैं और वह समयावधि जिसके भीतर ऐसा अधित्यजन किया जाएगा ।

(14) प्रत्येक धिवर्ष के लिए माध्यस्थम का स्थान और ऐसे स्थान जहाँ मध्यस्थ विचार-विमर्श के लिए, साक्षियों, विशेषज्ञों या पक्षकारों की सुनवाई के लिए या दस्तावेजों, माल या अन्य सम्पत्ति के निरीक्षण के लिए बैठक कर सकता है ।

(15) माध्यस्थम पंचाट दिया जाना, जिसके अन्तर्गत वह रीति जिसमें माध्यस्थम के पैनल की दशा में विनिश्चय किया जाना है और माध्यस्थम पंचाट का प्रारूप और उसकी विषय वस्तु भी है ।

माध्यस्थम पंचाट पक्ष के अंतर्गत तय पाई गई शर्तों पर माध्यस्थम पंचाट भी है । माध्यस्थम पंचाट की विषय वस्तु की अन्तर्वस्तुओं में लागत के लिए उपबंध सम्मिलित हो सकते हैं और जहाँ तक माध्यस्थम पंचाट रकम के संवाय के लिए है वहाँ दिये मूल रकम पर संबंधे व्याज भी सम्मिलित हो सकता है ।

(16) यथास्थिति ऐसी लागत के अधिग्रहण के रूप में जिसमें दावा, मतवीभन्न्य या विवाद की बाबत उद्गत किए जाने की सम्भावना होगी यथास्थिति निक्षेप या अनुपूरक निक्षेप की रकम, ऐसी लागत के अधिग्रहण रूप में जिसकी संभावना है, दावा, मतवीभन्न्य विवाद की बाबत उद्गत की जाएगी । परन्तु, जहाँ कोई प्रतिदावा मध्यस्थ के पास प्रस्तुत किया जाता है वहाँ प्रतिदावा के लिए निक्षेप की पृथक रकम भी विहित की जा सकती है ।

(17) प्रशासनिक सहायता जो विनियम केन्द्र माध्यस्थ कार्रवाई के संचालन को सुकर बनाने के लिए करे ।

(18) सूचना की तामील की पद्धति या रीति से सर्वोचित सभी विषय और पक्षकारों द्वारा पत्र व्यवहार जिसके अंतर्गत मध्यस्थ को संबंधित पत्र व्यवहार भी है ।

(19) कोई अन्य विषय जिसमें सुसंगत प्राधिकारी की राय, माध्यस्थम को सुकर बनाने के लिए, विनियमों में व्यवहृत की जानी अपेक्षित है ।

(4) (ख) सुसंगत प्राधिकारी, समय-समय पर विनियमों के उपबंधों के संशोधित, उपान्तरित, परिवर्तित, निरसित या परिवर्धित कर सकते हैं ।

मध्यस्थ के रूप में नियुक्त किए जाने वाले व्यक्तियों द्वारा प्रकटीकरण

(5) प्रत्येक व्यक्ति जिससे मध्यस्थ के रूप में उसकी सम्भावित नियुक्ति के संबंध में अनुरोध किया जाता है, सुसंगत प्राधिकारी को ऐसी किन्हीं परिस्थितियों को लिखित रूप में प्रकट करेगा जिनसे उसकी स्वतंत्रता और निष्पक्षता के बारे में न्यायोचित अन्वयाएँ उत्पन्न होने की संभावना है । यदि व्यक्ति ऐसी किन्हीं परिस्थितियों को प्रकट करता है जिनसे उसकी स्वतंत्रता और निष्पक्षता के संबंध में न्यायोचित आशंकाएँ उत्पन्न होने की संभावना है तो वह मध्यस्थ के रूप में नियुक्त नहीं किया जाएगा ।

मध्यस्थ के रूप में नियुक्त व्यक्तियों द्वारा प्रकटीकरण

(6) मध्यस्थ, उसकी नियुक्ति के समय से और संपूर्ण मध्यस्थता कार्यवाहियों के दौरान, ऊपर बंड (5) में निर्दिष्ट ऐसी किन्हीं परिस्थितियों को अविलंब, लिखित रूप में प्रकट करेगा जो मध्यस्थ के रूप में उसकी नियुक्ति के पश्चात् उसकी जानकारी में आई हों ।

मध्यस्थ को आदेश का समापन

(7) (1) मध्यस्थ का आदेश समाप्त हो जाएगा; यदि

(क) मध्यस्थ किसी कारण अपने पक्ष को छोड़ देता है; या

(ख) सुसंगत प्राधिकारी के रूप में मध्यस्थ वस्तुतः या विधिगतः अपने कर्तव्यों का पालन करने में असमर्थ हो जाता है या अन्य कारणों से अनावश्यक धिलख किए बिना कृत्य करने में असफल हो जाता है जिसके अंतर्गत सुसंगत प्राधिकारी द्वारा विहित समयावधि के भीतर माध्यस्थम पंचाट किए जाने में असफलता भी है । सुसंगत प्राधिकारी का ऐसा निनिश्चय अंतिम और पक्षकारों पर बंधुकर होगा; या

(ग) मध्यस्थ का आदेश, माध्यस्थम के दोनों पक्षकारों से मध्यस्थ के आदेश को समाप्त करने के लिए लिखित अनुरोध के प्राप्त होने पर सुसंगत प्राधिकारी द्वारा समाप्त किया जाता है; या

(घ) मध्यस्थ बंड (5) और (6) में निर्दिष्ट किन्हीं ऐसी परिस्थितियों को प्रकट करता है जिनसे सुसंगत प्राधिकारी की राय में उसकी स्वतंत्रता और निष्पक्षता के संबंध में न्यायोचित आशंकाएँ उत्पन्न होने की संभावना है ।

(8) मध्यस्थ कार्यवाहियाँ इसमें जैसा उपबंधित है उसके अनुसार समाप्त हो जाती हैं।

मध्यस्थ के पक्ष की रिक्ति को भरा जाना

(8) माध्यस्थ किए जाने के पूर्व किसी भी समय यदि माध्यस्थ का पक्ष किसी भी कारण से, वह चाहे जो भी हो, रिक्त हो जाता है, जिसके अंतर्गत मध्यस्थ की रणनीति या मूल्य के कारण, या सुसंगत प्राधिकारी द्वारा मध्यस्थ के आवेदों के समापन से या अन्यथा हुई रिक्ति भी है तो वह रिक्ति सुसंगत प्राधिकारी द्वारा उसी प्रक्रिया का अनुसरण करके भरी जाएगी जो मध्यस्थ की नियुक्ति के लिए उसके द्वारा विनिर्दिष्ट की गई है।

अभिनिर्दिष्ट कार्यवाही और साक्ष्य पर विचार

(9) जब तक पक्षकारों द्वारा अन्यथा करार न किया जाए, ऐसा कोई मध्यस्थ जो सुसंगत प्राधिकारी द्वारा मध्यस्थ के पक्ष की रिक्ति को भरने के लिए नियुक्त किया गया है, पहले हुई किसी सुनवाई की पुनरावृत्ति कर सकता है।

पूर्ववर्ती मध्यस्थ के आवेदों या विनियमों अधीनमान्य नहीं

(10) किसी मध्यस्थ का, उसके आवेदों की समाप्ति के पूर्व किया गया कोई आवेदों या विनियमों एकमात्र इस कारण से अधीनमान्य नहीं हो जाएगा कि उसका आवेदों समाप्त कर दिया गया है परन्तु जब पर्याप्तान संख्य (7) (1) (घ) के अनुसरण में किया गया हो तब मध्यस्थ के आवेदों के पर्याप्तान के पूर्व उसके द्वारा किया गया आवेदों या विनियमों तब अधीनमान्य हो जाएगा जब तक कि पक्षकारों द्वारा अन्यथा सहमति न हो।

मध्यस्थ द्वारा आवेदों किए गए अंतरिम मध्यस्थ पंचाट और अंतरिम उपाय

(11) मध्यस्थ माध्यस्थ पंचाट करने और साथ ही संरक्षण के लिए अंतरिम उपायों का उपबंध करने के लिए समाप्त किया जा सकता है। मध्यस्थ किसी अंतरिम उपाय के संबंध में समुचित प्रति-भूति का उपबंध करने के लिए किसी पक्षकार से अपेक्षा कर सकता है।

काउंसिल, अटार्नी या अधिवक्ता द्वारा माध्यस्थ कार्यवाहियों में संज्ञात होना

(12) ऐसी माध्यस्थ कार्यवाहियों में जहाँ दोनों पक्षकार व्यापारी सदस्य हों, पक्षकारों को काउंसिल, अटार्नी या अधिवक्ता के माध्यम से उप संज्ञात होने की अनुज्ञा नहीं होगी, किन्तु जहाँ पक्षकारों में से एक पक्षकार संघटक है वहाँ संघटन के काउंसिल, अटार्नी या अधिवक्ता के माध्यम से संज्ञात होने की अनुज्ञा होगी। यदि संघटक काउंसिल, अटार्नी या अधिवक्ता के माध्यम से उप संज्ञात होने का चयन करता है तो व्यापारी सदस्य को वही प्रसूति अनुदत्त करे जाएगी।

माध्यस्थ द्वारा माध्यस्थ पंचाट

(13) मध्यस्थ निर्देश के प्राप्त होने की तारीख से एक मास के भीतर माध्यस्थ पंचाट तय करेगा और माध्यस्थ का समय, सुसंगत प्राधिकारी द्वारा दोनों में से किसी पक्षकार द्वारा या मध्यस्थ द्वारा, जैसी भी स्थिति हो, आवेदन किए जाने पर, समय-समय पर बढ़ा सकता है।

इस संख्य के प्रयोजन के लिए माध्यस्थ को उस तारीख से निर्देश पर कार्य आरम्भ करने वाला समझा जाएगा जिस तारीख को मध्यस्थ ने उस पर विचार करना आरम्भ किया है या आरम्भ किया गया समझा गया है।

माध्यस्थ कार्यवाहियों का विनियम के उपबंधों के अधीन होना

(14) इन उपविधियों या विनियमों के उपबंधों द्वारा या उप-बंधित माध्यस्थ कार्यवाहियों अधिनियम के उपबंधों की उस सीमा तक अन्वयाधीन होगी जिस तक इन उपविधियों या विनियमों में उप-बंध नहीं किया गया है।

निर्देशों का अधिनियम

(15) अधिनियम की धारा 2(6) के प्रयोजनों के लिए ऐसे सभी दावे, मतवीचन्य या विवाद में, जो इन उपबंधों के अनुसार माध्यस्थों को प्रस्तुत किए जाने के लिए अपेक्षित हैं, जहाँ कहीं अधिनियम का भाग 1 कीतपय मुद्दे अवधारित करने के लिए पक्षकारों को स्वतंत्र छान्दता है वहाँ पक्षकार उस विवाद के क्षेत्र अवधारित करने व इसलिए सुसंगत प्राधिकारी को प्राधिकृत करने वाले समझे जाएंगे।

प्रशासनिक सहायता

(16) अधिनियम की धारा 6 के प्रयोजन के लिए ऐसे सभी दावे, मतवीचन्य या विवाद में जो इन उपविधियों और विनियमों के उपबंधों के अनुसार माध्यस्थों को प्रस्तुत किए जाने के लिए अपेक्षित हैं, पक्षकार, माध्यस्थ कार्यवाहियों के संचालन को सुकर बनाने के लिए सुसंगत प्राधिकारी की प्रशासनिक सहायता के लिए इन्तजाम कर लिए गए समझे जाएंगे।

अधिकारिता

(17) इन उपविधियों और विनियमों के अधीन माध्यस्थों को निर्देश के सभी पक्षकार और उनके अधीन दावा करने वाले व्यक्तियों को कोई भी, मुख्य के न्यायालयों या किसी अन्य न्यायालय की अधिनियम के उपबंधों को प्रभावी बनाने के प्रयोजन के लिए सुसंगत प्राधिकारी द्वारा निर्दिष्ट किया जा सकेगा, की अन्य अधिकाधिकारिता के संपूर्ण किए गए समझे जाएंगे।

कूट न्यायिक स्टॉक एक्सचेंज ऑफ इण्डिया लिमिटेड

जे. रविचन्द्रन
कम्पनी सचिव एवं
उपाध्यक्ष

NATIONAL STOCK EXCHANGE OF INDIA LTD., NEW DELHI

Chapter XI of the Bye-laws of National Stock Exchange of India Limited is substituted by the following Chapter.

Chapter XI : ARBITRATION

Definitions

'arbitrator' shall mean a sole arbitrator or a panel of arbitrators.

'Act' shall mean the Arbitration and Conciliation Act, 1996 and includes any statutory modification, replacement or re-enactment thereof, for the time being in force.

Reference to Arbitration

(1) All claims, differences or disputes between the Trading Members *inter se* and between Trading Members and Constituents arising out of or in relation to dealings, contracts and transactions made subject to the Bye-laws, Rules and Regulations of the Exchange or with reference to anything incidental thereto or in pursuance thereof or relating to their validity, construction, interpretation, fulfilment or the rights, obligations and liabilities of the parties thereto and including any question of whether such dealings, transactions and contracts have been entered into or not shall be submitted to arbitration in accordance with the provisions of these Bye-laws and Regulations.

Provisions of these Byelaws and Regulations deemed to form part of all dealings, contracts and transactions

(2) In all dealings, contracts and transactions, which are made or deemed to be made subject to the Byelaws, Rules and Regulations of the Exchange, the provisions relating to arbitration as provided in these Byelaws and Regulations shall form and shall be deemed to form part of dealings, contracts and transactions and the parties shall be deemed to have entered into an arbitration agreement in writing by which all claims, differences or disputes of the nature referred to in clause (1) above shall be submitted to arbitration as per the provisions of these Byelaws and Regulations.

Limitation period for reference of claims, differences or disputes for arbitration

(3) (i) All claims, differences or disputes referred to in clause (1) above shall be submitted to arbitration within six months from the date on which the claim, difference or dispute arose or shall be deemed to have arisen. The time taken in conciliation proceedings, if any, initiated and conducted as per the provisions of the Act and the time taken by the Relevant Authority to administratively resolve the claim, differences or disputes shall be excluded for the purpose of determining the period of six months.

Power of the Relevant Authority to prescribe Regulations

(4)(a) The Relevant Authority may, from time to time prescribe Regulations for the following :

(i) The procedure to be followed by the parties in arbitral proceedings.

In particular, and without prejudice to the generality of the foregoing power, such procedure may, inter alia, provide for the following :

- (a) the forms to be used;
- (b) the fees to be paid;
- (c) the mode, manner and time period for submission of all pleadings by both the parties;
- (d) matters relating to request from the parties for amending or supplementing the pleadings; and
- (e) the consequences upon failure to submit such pleadings by the parties.

(iii) The procedure to be followed by the arbitrator in conducting the arbitral proceedings.

In particular, and without prejudice to the generality of the foregoing power, such procedure may, inter alia, provide for

- (a) adjournment of hearings; and
- (b) terms and conditions subject to which the arbitrator may appoint experts to report on specific issues and the procedure to be followed in arbitral proceedings upon such an appointment.

(iii) Different set of arbitration procedures for different claims, differences or disputes after taking into consideration such circumstances and facts as the Relevant Authority may deem fit, which circumstances and facts may include the value of the subject matter and the persons who are involved as parties to such claims, differences or disputes.

(iv) Creation of seats of arbitration for different regions or prescribing geographical locations for conducting arbitrations and prescribing the courts which shall have jurisdiction for the purpose of the Act.

(v) The claims, differences or disputes which may be referred to a sole arbitrator and the claims, differences or disputes which may be referred to a panel of arbitrators.

(vi) The procedure for selection of persons eligible to act as arbitrators.

(vii) To procedure for appointment of arbitrator.

(viii) The terms, conditions and qualifications subject to which any arbitrator may be appointed.

(ix) Determination of the number of arbitrators in the case of a panel of arbitrators, subject to the condition that where any claim, difference or dispute is heard and determined by Panel or Arbitrators, the number of arbitrators of such a panel shall not be an even number. While constituting the panel of arbitrators, the Exchange shall make all endeavours to ensure that at any time not less than sixty per cent of the members of the panel of arbitrators are non-Trading Members.

(x) The time period within which a substitute arbitrator has to be appointed in case the office of the arbitrator falls vacant for any reason whatsoever.

(xi) The matters to be disclosed by any person who is approached in connection with his possible appointment as an arbitrator.

(xii) The procedure to be adopted by the parties for challenging an arbitrator.

(xiii) (a) The claims, differences or disputes which, may be decided by the arbitrator without a hearing unless either party in writing requests the Relevant Authority for a hearing and the time period within which such a request shall be made.

(b) The claims, differences or disputes which, may be decided by the arbitrator only by hearing the parties unless both the parties jointly waive the right to such hearing and the time period within which such a waiver shall be made.

(xiv) The place of arbitration for each reference and the places where the arbitrator can meet for consultation, for hearing witnesses, experts, or the parties, or for inspection of documents, goods or other property.

(xv) The making of the arbitral award including the manner in which a decision is to be taken in the case of panel of arbitrators and the form and contents of the arbitral award.

The term arbitral award shall also include an arbitral award on agreed terms. Prescriptions as to the contents of the arbitral award may include provisions for costs and where the arbitral award is for the payment of money, may include interest payable on principal sum due.

(xvi) The amount of deposit or supplementary deposit, as the case may be, as an advance for the costs which it expects will be incurred in respect of the claim, difference or dispute. Provided where a counter-claim is submitted to the arbitrator, a separate amount of deposit for the counter-claim may also be prescribed.

(xvii) The administrative assistance which the Exchange may render in order to facilitate the conduct of arbitral proceedings.

(xviii) All matters regarding the mode and the manner of service of notices and communications by the parties including communication addressed to arbitrator.

(xix) Any other matter which in the opinion of the Relevant Authority is required to be dealt with in the Regulations to facilitate arbitration.

(4) (b) The Relevant Authority from time to time may amend, modify, alter, repeal, or add to the provisions of the Regulations.

Disclosure by persons to be appointed as arbitrators

(5) Every person who is approached in connection with his possible appointment as an arbitrator, shall disclose to the Relevant Authority in writing any circumstances likely to give rise to justifiable doubts as to his independence and impartiality. If the person discloses any circumstances which in the opinion of the Relevant Authority are likely to give rise to justifiable doubts as to his independence and impartiality, then he shall not be appointed as an arbitrator.

Disclosure by persons appointed as arbitrator

(6) An arbitrator, from the time of his appointment and throughout the arbitral proceedings, shall, without delay, disclose to the Relevant Authority in writing any circumstances referred to in clause (5) above which have come to his knowledge after his appointment as an arbitrator.

Termination of mandates of the arbitrator

(7) (i) The mandate of the arbitrator shall terminate if

- (a) the arbitrator withdraws from office for any reason; or
- (b) in the opinion of the Relevant Authority, the arbitrator becomes de jure or de facto unable to perform his functions or for other reasons fails to act without undue delay including failure to make the arbitral award within the time period prescribed by the Relevant Authority. Such a decision of the Relevant Authority shall be final and binding on the parties; or
- (c) the mandate of the arbitrator is terminated by the Relevant Authority upon receipt of written request for the termination of the mandate of the arbitrator from both the parties to arbitration; or
- (d) the arbitrator discloses any circumstances referred to in clause (5) and (6) which in the opinion of the Relevant Authority are likely to give rise to justifiable doubts as to his independence and impartiality.
- (e) the arbitral proceedings are terminated as provided for herein.

Supplying of vacancies to the office of the arbitrator

(8) At any time before the making of the arbitral award should the office of the arbitrator fall vacant for any reason whatsoever including any vacancy due to the illness or death of the arbitrator or termination of the mandate of the arbitrator by the Relevant Authority or otherwise, the vacancy shall be supplied by the Relevant Authority by following the same procedure as specified by it for appointment of the arbitrator.

Consideration of recorded proceedings and evidence

(9) Unless otherwise agreed by parties, any arbitrator who has been appointed by the Relevant Authority to supply a vacancy to the office of the arbitrator, may repeat any hearings previously held.

Order or ruling of previous arbitrator not invalid.

(10) An order or ruling of the arbitrator made prior to the termination of his mandate shall not be invalid solely because his mandate has been terminated. Provided that when the termination has been effected pursuant to clause (7) (i) (d), the order or ruling of the arbitrator made prior to termination of his mandate shall become invalid unless otherwise agreed upon by the parties.

Interim arbitral award and interim measures ordered by the arbitrator

(11) The arbitrator may be empowered to make an interim arbitral award as well as to provide interim measures of protection. An arbitrator may require a party to provide appropriate security in connection with an interim measure.

Appearance in arbitral proceedings by counsel, attorney or advocate

(12) In arbitral proceedings where both the parties are Trading Members, the parties shall not be permitted to appear by counsel, attorney or advocate but where one of the parties is a Constituent, then the Constituent shall be permitted to appear by counsel, attorney or advocate. If the Constituent chooses to appear by counsel, attorney or advocate, then the Trading Member shall be granted a similar privilege.

Arbitral award by arbitrator

(13) The arbitrator shall make the arbitral award within one month from the date of entering upon the reference and the time to make the award may be extended from time to time by the Relevant Authority on an application by either of the parties or the arbitrator as the case might be.

For the purpose of this clause the arbitrator shall be deemed to have entered upon a reference on the date on which the arbitrator has or is deemed to have applied his mind.

Arbitration proceedings subject to the provisions of the Act.

(14) The arbitration proceedings as provided for by the provisions of these Byelaws and Regulations shall be subject to the provisions of the Act to the extent not provided for in these Byelaws or the Regulations.

Construction of references

(15) For the purposes of section 2(6) of the Act, in all claims, differences or disputes which are required to be submitted to arbitration as per the provisions of these Byelaws and the Regulations, wherever Part I of the Act leaves the parties free to determine a certain issue, the parties shall be deemed to have authorised the Relevant Authority to determine that issue.

Administrative assistance

(16) For the purpose of section 6 of the Act, in all claims, differences or disputes which are required to be submitted to arbitration as per the provisions of these Byelaws and Regulations, the parties shall be deemed to have arranged for administrative assistance of the Relevant Authority in order to facilitate the conduct of the arbitral proceedings.

Jurisdiction

(17) All parties to a reference to arbitration under these Byelaws and Regulations and the persons, if any, claiming under them, shall be deemed to have submitted to the exclusive jurisdiction of the courts in Mumbai or any other court as may be prescribed by the Relevant Authority for the purpose of giving effect to the provisions of the Act.

For National Bank Exchange of India limited

J. RAVICHANDRAN
Company Secretary &
Vice President

प्रबन्धक, भारत सरकार मन्त्रालय, फरीदाबाद द्वारा मुद्रित

एवं प्रकाशन नियंत्रक, दिल्ली द्वारा प्रकाशित, 1998

PRINTED BY THE MANAGER, GOVERNMENT OF INDIA PRESS, FARIDABAD,
AND PUBLISHED BY THE CONTROLLER OF PUBLICATIONS, DELHI, 1998